AYUDH : International Peer-Reviewed Referred Journal Vol-1 ISSN: 2321-2160

रेडियो पत्रकारिता

प्रोफेसर डॉ.जालिंदर इंगले
शोध निर्देशक तथा हिंदी विभागाध्यक्ष
म.स.गा.महाविद्यालय मालेगांव,कैंप नासिक
ईमेल.dr.inglejalindar@gmaillcom

प्रस्तावना :-

आधुनिक युग में जनसंचार के अनेक सुरक्षित माध्यम उपलब्ध है। टेलीफोन के बाद रेडियो के अविष्कार में संचार की प्रक्रिया को दूरस्थ स्थानों तक संभव बना कर मनुष्य समाजों को परस्पर जोड़ा है। जब पत्रकारिता वीडियो के साथ संलग्न हुई तो धीरे-धीरे इससे मनुष्य समाज के भीतर अपना स्थान एक विश्वसनीय मित्र के रुप में बना लिया। वास्तव में रेडियो ऐसा संचार माध्यम है, जिसके माध्यम से व्यापक जन समुदाय तक एक साथ संदेश पहुंचाया जा सकता है। रेडियो विद्युत ऊर्जा के द्वारा ध्वनि तरंगों को काफी दूर तक भेजता है और इस ध्वनि तरंगों को भेजने में इतना कम समय लगता है कि काल बोध की दृष्टि से इसे 0 कहा जा सकता है अर्थात किसी रेडियो स्टेशन से जिस समय संदेश प्रसारित होता है ठीक उसी समय वह हजारों मील दूर बैठे लोग उसे अपने रेडियो सेट पर सुन सकते हैं। ट्रांजिस्टर के अविष्कार तो विद्युत ऊर्जा की अनिवार्यता को ही समाप्त कर दिया है। अब सामान्य बैटरी से काम होता है। ट्रांजिस्टर से संचार का सस्ता सुविधाजनक एवं लोकप्रिय साधन बन गया है। निरक्षर लोग भी इस जनमाध्यम से रूचि पूर्वक संदेश ग्रहण कर सकते हैं। एक साथ बैठकर मनोरंजन के कार्यक्रम सुन सकते हैं। देश विदेश के समाचार सुन सकते हैं उन पर बैठे - बैठे बातचीत कर सकते। घटनाओं का विश्लेषण समझ सकते हैं नई-नई जानकारियां पा सकते हैं।

प्रिंट मीडिया की सबसे बड़ी सीमा यह है कि वह निरीक्षकों की विशाल जनसंख्या के लिए उपयोगी है जबकि तीसरी दुनिया के देशों में अब भी लगभग नवबोध करोड़ लोग निरक्षर है। प्रिंट मीडिया की दूसरी सीमा यह है कि समाचार पत्र मुद्रित होने और हैकर द्वारा पाठकों तक पहुंचाने के बीच काफी लंबा समय लग जाता है। दैनिक अखबार का हर अंक 24 घंटे के बाद प्रकाशित होता है इसीलिए प्रिंट मीडिया समाचारों को इतनी तीव्र गति से नहीं पहुंच सकता जितनी तीव्र गति से रेडियो पहुंचाता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए जोरीमल पाक ने ठीक ही लिखा है कि," रेडियो निरीक्षण के लिए भी एक वरदान है जिसके द्वारा वह सिर्फ सुनकर अधिक से अधिक सूचना ज्ञान और मनोरंजन हासिल कर लेते हैं। रेडियो और ट्रांजिस्टर की कीमत भी बहुत अधिक नहीं होती इस कारण वह सामान्य जनता के लिए भी कमोबेश सुलभ है। यही कारण है कि टीवी के व्यापक प्रसार के बावजूद तीसरी दुनिया के देशों में रेडियो का अपना महत्व आज भी कायम है।"।

रेडियो के विकास की संक्षिप्त रूपरेखा:-

रेडियो का आविष्कार 19वीं शताब्दी में हुआ। वास्तव में रेडियो की कहानी 1800 – 1500 ईस्वी सन् से होती है। जब इटली के एक इंजीनियर गूगल ई ओ मार्क इन्होंने मारकोनी ने रेडियो टेलीग्राफी के जरिए पहला संदेश प्रसारित किया। यह संदेश मर्स कोड़ के रूप में था। रेडियो पर मनुष्य की आवाज पहली बार 1906 में सुनाई दिया। यह तब संभव हुआ जब अमेरिका के लीडी फॉरेस्ट ने प्रयोग के तौर पर एक प्रसारण करने में सफलता प्राप्त की। उसने एक परिष्कृत निर्वात नलिका का आविष्कार किया जो आने वाले संकेतों को विस्तार देने के लिए थी। डीप फॉरेस्ट ही था जिसने सर्वप्रथम सन 1916 में पहला रेडियो समाचार प्रसारित किया था। वह समाचार वास्तव में संयुक्त राष्ट्र में राष्ट्रपति चुनाव के परिणाम की रिपोर्ट की सन 1920 के बाद तो अमेरिका और ब्रिटेन विश्व के कई देशों में रेडियो ने धूम मचा दी। इसी अवधि में यूरोप अमेरिका तथा एशियाई देशों में बहुत से शोध कार्य हुए थे इन शोध कार्यों के फलस्वरूप रेडियो ने अभूतपूर्व प्रगति की कालांतर में इलेक्ट्रॉन तथा ट्रांजिस्टर की खोज ने रेडियो ट्रांजिस्टर तथा दूरसंचार के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास किया।